राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 अप्रैल 2019
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२०
युगाब्द-५१२०, अंक-११२, वर्ष-१२
चैत्र, विक्रमी २०७६ (अप्रैल 2019)

मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

नेह भद्रं रक्षस्विने नावयै नोपया उत। गवे च भद्रं धेनवे वीराय च श्रवस्यतेऽनेहसो व ऊतयः सु ऊतयो व ऊतयः ॥ –ऋ० ६। ४। ९। २

व्याख्यान–हे भगवन्! (रक्षस्विने भद्रं नेह) पापी, हिंसक, दुष्टात्मा को इस संसार में सुख मत देना। (नावयै) धर्म से विपरीत चलनेवाले को सुख कभी मत हो। तथा (नोपया उत) अधर्मी के समीप रहनेवाले उसके सहायक को भी सुख नहीं हो। ऐसी प्रार्थना आप से हमारी है कि दुष्ट को सुख कभी न होना चाहिए। नहीं तो कोई जन धर्म में रुचि ही न करेगा। किन्तु इस संसार में धर्मात्माओं को ही सुख सदा दीजिए। [(गवे)] तथा हमारी शमदमादियुक्त इन्द्रियाँ, दुग्ध देनेवाली गौ आदि [(वीराय)] वीर पुत्र और शुरवीर भृत्य (श्रवस्यते) विद्या विज्ञान और अन्नाद्यैश्वर्ययुक्त हमारे देश के राजा और धनाढ्यजन तथा इनके लिए (अनेहसः) निष्पाप, निरुपद्रव, स्थिर दृढ़ सुख हो। (व ऊतयो व ऊतयः) (वः युष्माकं, बहुवचनमादरार्थम्) हे सर्वरक्षकेश्वर! आप सर्वरक्षण अर्थात् पूर्वोक्त सब धर्मात्माओं के रक्षक हैं। जिन पर आप रक्षक हो, उनको सदैव (भद्रम्) कल्याण [परमसुख] प्राप्त होता है, अन्य को नहीं ।

सम्पादकीय

लोकतन्त्र और घोषणापत्र

हम सभी इस बात से सुपरिचित हैं कि हमारे देश में निर्वाचन प्रक्रिया के रूप में वर्तमान में सबसे महत्वपूर्ण घटनाक्रम चल रहा हैं जिसमें हम अपने जनप्रतिनिधियों का निर्वाचन करने वाले हैं और सभी लोगों को इस निर्वाचन में भाग लेना ही चाहिए। जिस प्रणाली को हम वर्तमान में अंगीकार किए हुए हैं यह एक सुंदर और समीचीन प्रणाली है किंतु यह प्रणाली तभी समीचीन है जब इसका निर्वाचन करने वाले प्रजा जन सुयोग्य हों, विचारशील हों, विवेक पूर्वक अपने मताधिकार का प्रयोग अपने राष्ट्र के समउज्जवल भविष्य के लिए करते हों। साथ ही यह भी इसी के भीतर आ जाता है कि जनप्रतिनिधि बनने की आकांक्षा रखने वाले भी सुयोग्य हों। अपने कर्तव्य का विवेकपूर्वक, स्वार्थरहित होकर आचरण करते हों, राष्ट्र से प्राप्त विशेषाधिकारों का प्रजा के हित में उन्नति में सुरक्षा में विनियोग करें। हमारे संपूर्ण देश को यदि हिमालय से समुद्रपर्यंत और कच्छ से कछार पर्यंत ठीक ठीक प्रकार से देखा जाए तो यह निश्चय पूर्वक कहने में थोड़ा भी संकोच नहीं कि यहां पर वर्तमान काल तक अपने संकुचित स्वार्थों को छोड़कर, राष्ट्र को सर्वप्रथम समझकर निर्णय करने वाली जनता ही नहीं है और यदि जनता ही नहीं है तब नेता कहां से होंगे? क्योंकि जनता में से तो नेताओं का प्राकाट्य होता है अर्थात् जनता में से ही नेता निकल कर आते हैं। इसीलिए कह सकते हैं कि जैसी जनता, वैसे नेता। किंतु यह एक विचार का एक पक्ष है जिसे नेता लोग ऑनलाइन तो नहीं किंतु यदा-कदा ऑफलाइन सुनाते ही रहते हैं।

विचार का सत्य पक्ष यह है कि यह मानव जीवन ऊपर से नीचे को प्रवाहित होता है जैसे पेड़ों की जड़ें नीचे भूमि के भीतर और तना, टहनियां, पुष्प-पत्र ऊपर आकाश देश में होते हैं, ऐसे मानव समाज की जड़ें अर्थात् मूल ऊपर की ओर और शाखाएँ-प्रशाखाएँ नीचे की ओर होती हैं इसीलिए ऋषिवर व्यास जी ने महाभारत में कहा कि **यथा राजा तथा प्रजा**, श्री कृष्ण जी ने गीता में कहा है- **यद्यदाचरति श्रेष्ठः, तत्तद्देवेतरोजनः।**

स यत्प्रमाणं कुरुते, लोकस्तदनु वर्तते।

अतः यह सुनिश्चित हुआ कि स्वयं को नेता मानने, मनवाने, कहलाने, कहलवाने वाले लोगों का प्रथम ही योग्यतम, ज्ञानवान, विवेकशील और सत्य पथ का राही होना आवश्यक है, तदनुरूप जनता का भी उसी दिशा में बढ़ना सुनिश्चित होगा।

किंतु जब कहीं ऐसा देखने का प्रयास करते हैं तब पाते हैं कि हमारे नेता कैसे हैं? और यह देखने के लिए भी यदि हम नेताओं के व्यक्तिगत आचरण- अनाचरण, सत्य-असत्य को एक ओर रख लें, और नेता नहीं

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

अपितु नेताओं के भी सर्वोच्च बौद्धिक समूहों द्वारा तैयार किए गए घोषणा-पत्रों का भी स्थल अध्ययन करें तब भी हमें बोधा हो जाना चाहिए कि हमारे नेता कितने महान सत्यपंथानुगामी हैं? यह सुनिश्चित है कि मानव जीवन में त्रुटियां रह ही जाती हैं, सभी के सभी के रहती हैं, किंतु त्रुटियां यदि सुनियोजित, सुविचारित रीति से की जाती हों तो क्या कहा जाएगा? हमारा तथा हमारे देश का यही दुर्भाग्य है कि त्रुटियां तो क्या कहें, यहां षड्यंत्र-पूर्वक घोषणा पत्र लिखे और घोषित किए जाते हैं। जनता को टुकड़ों टुकड़ों में बांटकर, भिन्न भिन्न क्षेत्रों में, जाति-उपजातियों में, मत-पंथ में, बांट बांट कर उनमें स्वार्थ की पराकाष्ठा वाली इच्छा जागृत की जाती है। फिर उन इच्छाओं को बलवती बनाने के लिए खाद पानी जुटाया जाता है और फिर जब वे वीभत्सरूप धरकर सामने आ जाती हैं तब जनता को उनके भाग्य भरोसे छोड़कर नेता या तो छुप जाते हैं या कोई नया षड्यंत्र रच कर नए-नए अवतारों में उतर जाते हैं,

पाठक गणों आइए देखते हैं हमारे देश की दो प्रमुख राजनीतिक पार्टियों के दोहरे मापदंड को, एक सबसे प्रमुख, सबसे अधिक समय तक राज्य करने वाली पार्टी है कांग्रेस। इसका सबसे पुराना नारा है **गरीबी हटाओ**, लगभग 50 से अधिक वर्षों से इसी के सहारे लोगों को स्वप्न दिखाकर शासन करती रही है और आगे उसी के सहारे 2019 में भी जनता से वोट मांग रही है और जनता में लोभ की वृत्ति को और भी भड़का रही है, आगे भी जब-जब भी चुनाव होंगे यह नारा गूंजता ही रहेगा। दूसरे नम्बर पर भारतीय जनता पार्टी है, इनकी इससे पहले 'भारतीय जनसंघ' नामक पार्टी के काल से मांग है- **धारा ३७० हटाओ, कश्मीर बचाओ**'' भारतीय जनसंघ के प्रथम अध्यक्ष डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी कश्मीर के लिए ही बलिदान हुए थे। दो बार यह पार्टी बार पंचवर्षीय कार्यकाल पूरा करने के उपरान्त भी इसी मुद्दे को पुनः घोषणा पत्र के मुख्य बिन्दुओं में रखकर वोट मांग रही है और लगता है आगे भी मांगती रहेगी। हमने दोनों राजनैतिक दलों के मात्र एक-एक घोषणा की चर्चा की है, अन्य सभी घोषणाओं का विश्लेषण, विमर्श आप सभी के लिए छोड़ रहे हैं, आप सभी विचारों और भावी भारत भूमिका तदनुसार ही निश्चित करें।

अपना लक्ष्य किसी की भी लहर चले, फिर भी न भूलें! वह है-आर्य और आर्यावर्त्त।

आर्य महासंघ का प्रान्तीय अधिवेशन-दिल्ली

आर्य महासंघ का दिल्ली प्रान्तीय अधिवेशन

आर्य महासंघ का दिल्ली प्रांतीय अधिवेशन मावलंकर हॉल कांस्टीट्यूशन क्लब रफी मार्ग दिल्ली में आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में आर्य महासंघ के अंतर्गत आने वाली सभी संस्थाओं यथा राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा, राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा ,राष्ट्रीय आर्य संरक्षिणी सभा एवं राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का प्रारंभ वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना एवं अपने श्रेष्ठ आर्य पूर्वजों के जयघोष के साथ हुआ। आर्य भजन उपदेशक आर्य सुमन जी ने नववर्ष विक्रमी संवत 2076 के प्रारंभ होने पर अपने मधुर स्वर में भजनों के द्वारा सुंदर चित्रण किया एवं आर्य समाज स्थापना दिवस की बधाई उपस्थित आर्य जनसमूह को एवं इस मंच के माध्यम से पूरे राष्ट्र को दी।

कार्यक्रम के संचालक आर्य महासंघ के महासचिव आचार्य सतीश ने बताया कि इस राष्ट्र की स्थिति बहुत ही भयावह हो चुकी है। राष्ट्र खंड खंड होकर टूट कर बिखर रहा है। अनेकों मत, पंथ एवं संप्रदाय अपने अपने स्वार्थों के वशीभूत होकर राष्ट्र को कमजोर कर रहे हैं। राष्ट्र विरोधी ताकतें देश की एकता को समाप्त करके इसे तोड़ने का निरंतर प्रयास कर रही हैं। ऐसे समय में वेद के सिद्धांतों से ओतप्रोत एवं महर्षि दयानंद की दी हुई शिक्षाओं को आत्मसात किए हुए राष्ट्रभक्त संगठनों के समूह, आर्य महासंघ ने इस राष्ट्र को, इसके श्रेष्ठ नागरिकों को संगठित करके इस राष्ट्र को बचाने का भागीरथ संकल्प लिया है। महासंघ के सभी संगठन समाज के प्रत्येक क्षेत्र के लोगों को वेद के सिद्धांतों से अवगत कराकर राष्ट्र निर्माण का कार्य कर रहे हैं। कार्यक्रम में बोलते हुए राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य राजेश जी ने बताया कि हम सबके बच्चे आज अवैदिक शिक्षा के कारण उद्दंड और अवज्ञा करने वाले होते जा रहे हैं। वो अपने माता पिता व वरिष्ठों का उचित सम्मान नहीं करते हैं। अपने आदर्श पूर्वजों के बारे में आज के छात्रों को कोई जानकारी ही नहीं है। राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड आदि कई राज्यों में पांच दिवसीय छात्र गुरुकुल के माध्यम से नैतिक शिक्षा, मानसिक व आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाने की कला एवं शारीरिक शक्ति बढ़ाने के उपाय बहुत ही सरल तरीके से सिखा रही है। आने वाली ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में अलग-अलग स्थानों पर इन पांच दिवसीय गुरुकुलों का आयोजन किया जाएगा। इन शिविरों में अपने बच्चों को भेजकर उन्हें सुसंस्कारित करें। इस अवसर पर राष्ट्रीय छात्र सभा के विस्तार को करते हुए नए पदाधिकारियों की नियुक्ति भी की गयी। कार्यक्रम में अपने विचार रखते हुए राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा के राष्ट्रीय महासचिव आर्य धनुष्मान ने बहुत ही ओजस्वी वाणी से समाज को आर्य क्षत्रियों द्वारा संरक्षित करने की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय आर्य संरक्षणी सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य संजीव जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि सभी आर्य बार-बार सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करें। प्रातः एवं सायं काल वैदिक संध्या करें एवं अपने अंदर दान देने की प्रवृत्ति बनावें। आचार्य जी ने दो दिवसीय लघु गुरुकुल का महत्व बताते हुए समझाया कि हम अधिक से अधिक लोगों को वेद के सिद्धांत देने के लिए दो दिवसीय लघु गुरुकुल में लावें। आर्य बनने के उपरांत उन्हें संरक्षित करने के लिए प्रत्येक दस आर्यों पर एक संरक्षक नियुक्त किया जा रहा है जो 3 महीने तक उनका संरक्षण करेगा एवं संध्या उपासना सीखने में उनकी मदद करेगा। इस प्रकार से राष्ट्र के लोगों को पाखंड, आडंबर एवं अंधविश्वास से बचाकर सत्य सनातन वेद के रास्ते का पथिक बना कर राष्ट्र को पुनः सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वशक्तिमान राष्ट्र बनाया जा सकेगा।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य जितेंद्र जी ने बताया कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक संपत्ति उस देश के वो लोग होते हैं जो विचारशील अर्थात् आर्य होते हैं और उनकी संख्या कितनी है? राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा समाज के लोगों को सर्वश्रेष्ठ विद्या अर्थात् वेद विद्या देकर, विद्वान बनाकर राष्ट्र को उन्नत बनाने का कठोर परिश्रम कर रही है। प्रति सप्ताह शनिवार रविवार को पूरे राष्ट्र में अनेकों स्थानों पर वेद विद्या का दो दिवसीय प्रकल्प चलाया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य अवनीश जी को उत्तर प्रदेश प्रांत का महासचिव मनोनीत किया गया एवं आर्य महेश जी को राष्ट्रीय महासचिव मनोनीत किया गया ।
सभा को संबोधित करते हुए आचार्य इंदिरा जी ने उपस्थित जनसमूह को **एक अरब, छियानवें करोड़, आठ लाख, तिरेपन हजार एक सौ बीसवें** वर्ष एवं **विक्रमी संवत २०७६** की बधाई दी और बताया कि इस राष्ट्र का आदि नाम आर्यावर्त था और यह नाम एक अरब, छियानवें करोड़ आठ लाख अडतालिइस हजार वर्षों तक रहा । उसके उपरांत 4000 वर्षों तक इसका राष्ट्र का नाम भारत रहा फिर 800 वर्षों तक इस राष्ट्र का नाम हिंदुस्तान हो गया और पिछले 200 वर्षों से इसका नाम बदलकर इंडिया हो गया है। इसका कारण क्या है? इसका कारण केवल और केवल वेद विद्या का क्षीण हो जाना है। हमारे वैदिक सिद्धांतों के स्थान पर पुराण, कुरान और बाइबल आदि अविद्या देने वाले ग्रंथों के सिद्धांतों का समाज में प्रचारित होना इसका मुख्य कारण है। आचार्य जी ने उपस्थित महिलाओं को प्रेरणा देते हुए कहा कि महर्षि दयानंद जी की कृपा से राष्ट्र में महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार मिला है। आप सब महिलाओं को 2 दिवसीय लघु गुरुकुल के माध्यम से वेद विद्या को प्राप्त करना चाहिए।

कार्यक्रम के अंत में आर्य महासंघ के अध्यक्ष एवं मुख्य वक्ता आचार्य हनुमत् प्रसाद जी ने अपने ओजस्वी व्याख्यान से उपस्थित लोगों को ऊर्जा से भर दिया। आचार्य जी ने बताया कि आज पूरे राष्ट्र की जनसंख्या एक अरब चालीस करोड़ के आसपास होने जा रही है और इसमें आर्यों की संख्या मात्र कुछ लाख है। यदि सिद्धांतों की रक्षा करते हुए राष्ट्र को श्रेष्ठ बनाना है तो अपने पूर्वजों के पुरुषार्थ को याद करें एवं इस राष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने के लिए एकजुट होके सभी आर्यों को पुरुषार्थ करना होगा। सभी आर्य अपने निजी स्वार्थों को छोड़कर के परमार्थ एवं पुरुषार्थ से दिन-रात कार्य करें तभी यह राष्ट्र उन्नत हो सकेगा।

कार्यक्रम में अलग-अलग प्रदेशों से आए हुए आर्य जनप्रतिनिधियों ने इस अधिवेशन में हिस्सा लिया। मध्य प्रदेश से आचार्य भानु प्रताप जी, आर्य राकेश उपाध्याय, आर्य वेद प्रकाश, आचार्य संदीप जी, डॉ. जगदीश जी एवं आर्य रितेश जी एवं बिहार, गुजरात, राजस्थान और उत्तराखंड से भी आर्य प्रतिनिधियों ने इस अधिवेशन में भाग लिया। व्यवस्था में मेरे साथ अन्य लोगों के आलावा आर्य जसबीर सिंह (कोषाध्यक्ष-आर्य महासंघ), आर्य यशपाल (प्रान्तीय अध्यक्ष-आर्य क्षत्रिय सभा) का विशेष योगदान रहा।

-डॉ. सुनील आर्य (सचिव-आर्य महासंघ)

आओ कर्तव्य पथ पर बढ़ें ....

-आचार्य सतीश

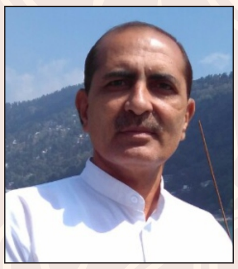

लोगों में एक अवधारणा है कि जब व्यक्ति समाज के लिए कार्य करता है तो उसे अनेक प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ता है, दुख उठाने पड़ते हैं, अपमान सहना पड़ता है, संघर्ष करना पड़ता है आदि-आदि। लेकिन यदि विचार करें तो यह केवल समाज के लिए कार्य करते हुए होता है या कोई भी कार्य करने हुए होता है। व्यक्ति जब अपने घर-परिवार के कार्य करता है उसका भरण-पोषण करता है, परिवार को व्यवस्थित करके उसे स्थापित करता है तो क्या उस स्थिति में भी उसे इन सबका सामना नहीं करना पड़ता है, दुख नहीं उठाना पड़ता है या अपमान नहीं सहना पड़ता है, क्या जीविका के लिए सघर्ष नहीं होता है? समाज व राष्ट्र के लिए कार्य करते हुए भी और घर-परिवार को सम्भालने की प्रकिया में भी यह होता ही होता है। लेकिन लोगों ने एक को अनदेखा कर समाज व राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य को छोड़ दिया कि इसमें तो बड़ा संघर्ष है, कष्ट है, अपमान है, दुख है और इन्हीं सब को सोचते सोचते मनुष्य अधिक से अधिक परिवारोन्मुखी हो जाता है। वह यह विचार ही नहीं करता है यह सब पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए भी होता है तब भी संघर्ष होता है तब भी पुरुषार्थ होता है, तब भी दुख उठना पड़ता है, मान-अपमान मिलता है, बाहर के लोगों से नहीं मिलेगा तो अपने लोगों से मिलेगा। लेकिन जीवन में यह सुख-दुख, मान-अपमान आदि हर स्थिति में होगा, इससे बचा नहीं जा सकता है। जो इन सबको सोचकर समाज व राष्ट्र के प्रति अपने कृतव्यों से भागते हैं वे अगर अपनी दृष्टि को थोड़ा व्यापक करें तो पाऐंगे कि पारिवारिक कष्टों के कारण ही कितने ही लोगों को आत्महत्याएं करते देखते हैं, अवसाद में अपना जीवन बिताते देखते हैं। घर-परिवार के झगड़ों में कितने अपराध होते देखा गया है। कितने ही कष्टों का आधार है यह और व्यक्ति निस्वार्थ भाव से परिवार में लगा रहता है अपना पूरा जीवन बिता देता है। उससे बाहर सोच ही नहीं पाता है और एकांगी जीवन को जीते-जीते ही अपनी आयु के अन्तिम पड़ाव पर जाकर यह सोच पाता है कि मैंने क्या किया। अनेकों लोग तो उस समय भी नहीं सोच पाते।

जब सुख: दुख, भाव-अभाव, मान-अपमान सामाजिक कार्य न करते हुए भी मिलना है तो फिर क्या इन सबको छोडकर सामाजिक कार्य में ही लग जाना चाहिए। समाज व राष्ट्र को ही अपने को समर्पित कर देना चाहिए?

आर्यों/आर्याओं हमारी शाश्वत वैदिक संस्कृति मे इन सबका समाधान बड़ी कुशलता से किया गया है। वैदिक सिद्धान्त हमें एकांगी नहीं बनाते। ऋषियों द्वारा स्थापित की गई आश्रम व्यवस्था इस समस्या का समाधान बड़े अच्छे से करती है। जहाँ पारिवारिक कर्तव्यों के साथ-साथ समाज व राष्ट्र के प्रति भी अपने कृतव्यों का पालन करने का आदेश देती है। वहीं वानप्रस्थ तक आते आते अधिकांश रूप से समाज के पूर्ण सर्मपण का भाव पैदा करती है। गृहस्थ आश्रम जहां एक सन्तुलन का स्थापित करने का काल है। वहीं वानप्रस्थ में अपने को अधिक से अधिक समाज व राष्ट्र के कार्य के लिए आहूत करने का निर्देश है। हाँ, यह तो सम्भव है कि कोई व्यक्ति युवावस्था से ही सम्पूर्ण रूप से समाज व राष्ट्र को समर्पित हो जाये। लेकिन यह सम्भव नहीं है कि किसी भी काल में चाहे गृहाश्रम ही क्यों न हो सम्पूर्ण रूप से केवल घर परिवार में ही अपने को खपा दे। उसके हर परिस्थिति में समाज व राष्ट्र के प्रति कुछ कर्तव्य अवश्य बनते हैं जिनका उसे निर्वहन करना ही करना है।

आर्यों/आर्याओं मान-अपमान, दुख, कष्ट, संघर्ष के भय से यदि घर में बैठे रहोगे तो भी इन सब से छुटकारा नहीं मिला करता है। ये सब तो रहेगा चाहे हम अपना सब कुछ केवल घर-परिवार के लिये आहूत कर दें। एकांगी जीवन बना लें, समाज-राष्ट्र के प्रति अपनी कर्तव्यों को भूल जाएं तब भी मान-अपमान, दुख, कष्ट मिलेगा, संघर्ष करना पड़ेगा इससे बचा नहीं जा सकता है। जब यह सब मिलना ही है तो फिर हम अपने कर्तव्य से पीछे क्यों हटें। ऋषियों की जो विद्या हमें मिली है उसे क्यों न अन्य तक पहुंचाने का संकल्प लें। संघर्ष करें, थोड़े बहुत दुख व कष्ट इसके लिए भी सहें, अभाव को भी सहन करते हुए कार्य करें। यदि यह सब करेंगे तो कर्तव्य का पालन तो होगा ही आत्मसंतुष्टि भी प्राप्त होगी। यदि सारा जीवन इन्हीं कष्टों को सहते घर में ही जीवन बिता दिया, परिवार मात्र के लिए ही जीवन बिता दिया तो कर्तव्यहीनता के बोध से ग्रसित तो होगें ही और समस्याओं से छुटकारा तब भी नहीं मिलेगा।

आओ, वैदिक पथ पर चलते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें। ऋषियों के पथ पर चलते हुए समाज व राष्ट्र के लिए भी अपने जीवन का एक हिस्सा तो अवश्य ही अर्पित करें। आज राष्ट्र को अवश्यकता है कि आर्य सिद्धान्त व्यापक हों, क्योंकि उसके बिना न तो समाज और न ही राष्ट्र की समस्याओं का स्थायी समाधान है। अपने समाज को अभाव व शोषण से मुक्त करना है, राष्ट्र को संरक्षित करना है तो निश्चित जानिये हमें अपने कर्तव्य का पालन करना ही होगा। विद्या को बढ़ाने के लिए पुरुषार्थ करना ही होगा। आर्य सिद्धान्त को जन जन को जनाना ही पड़ेगा और इसके लिए हम सब आर्यों/आर्याओं को घर से निकलकर संघर्ष और पुरूषार्थ करना ही पड़ेगा बिना कष्टों की चिन्ता किये। तभी हम अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ पायेंगे- यही मार्ग है, यहीं विकल्प है।

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	05 अप्रैल	दिन-शुक्रवार	मास-चैत्र	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-रेवती
पूर्णिमा	19 अप्रैल	दिन-शुक्रवार	मास-चैत्र	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-चित्रा
अमावस्या	04 मई	दिन-शनिवार	मास-वैशाख	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-अश्विनी
पूर्णिमा	18 मई	दिन-शनिवार	मास-वैशाख	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-विशाखा

व्यवहारभानुः - आचरण की शिक्षा के लिए ऋषि का श्रेष्ठ ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर सामान्य सिद्धान्त अनुरूप व्यवहार के लिए व्यवहारभानु जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि का एक-एक शब्द व पंक्ति व्यक्ति के लिए अमूल्य प्रेरणा का स्रोत है। आइए उनकी व्यवहारभानुः पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन की दिशा में आगे बढ़कर अपने-अपने आचरण को वेदानुकुल बनाएं और ऋषि के ही शब्दों के अनुरूप- **''अपने तथा अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।''**

यहाँ प्रस्तुत है व्यवहारभानुः पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय प्रारंभ करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार व्यवहार करते हैं तो हम कितना अपना व दूसरों का हित कर सकते हैं और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के दुर्व्यवहारों से न केवल स्वयं बच सकते हैं अपितु अपनी सन्तानों तथा शिष्यों को भी बचा सकते हैं।

उत्तम माता-पिता आदि उनसे कहते हैं कि-'सुनो लड़को! अब तुम्हारी पढ़ने-गुनने, सत्संग करने, अच्छी-अच्छी बात सीखने, वीर्यनिग्रहण, आचार्य आदि की सेवा करके विद्वान् होने, शरीर और आत्मा की पूर्ण युवा अवस्था आदि उत्तम कर्म करने की अवस्था है। जो चूकोगे तो फिर पछताओगे। पुनः ऐसा समय तुमको मिलना अति कठिन है। क्योंकि जब तक हम घर का, और तुम्हारे खाने-पीने आदि का प्रबन्ध करने वाले हैं, तब तक तुम सुशिक्षाग्रहणपूर्वक सर्वोत्कृष्ट विद्यारूपी धन को संचित करो। यही अक्षय धन है कि जिसको चोर आदि न ले सकते, न भार होता। और जितना दान करो उतना ही अधिक-अधिक बढ़ता जाता है। इससे होने से जहाँ रहोगे, वहाँ सुखी और प्रतिष्ठा पाओगे। धर्म अर्थ काम और मोक्ष के सम्बन्धी कर्मों को जानकर सिद्ध कर सकोगे।

हम जब तुमको विद्यारूप श्रेष्ठ गुणों से अलंकृत देखेंगे, तभी हमको परम सन्तोष होगा। और जो तुम कोई दुष्ट काम करोगे, तो हम अपना भी अभाग्य समझेंगे। क्योंकि हमारे कौन से पापों के फल से हमको दुष्ट सन्तान मिले। क्या तुम नहीं देखते कि जिन मनुष्यों को राज्य-धन प्राप्त भी हैं, परन्तु विद्या और उत्तम शिक्षा के विना नष्ट-भ्रष्ट हो जाते। और श्रेष्ठ विद्या-सुशिक्षा से युक्त दरिद्र भी राज्य और ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं।

तुमको चाहिए कि -

'यान्यस्माकं ँसुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि ॥

तैत्तिरीय आरण्यके प्रपाठके ७ अनुवाकः ११

'जो-जो हमारे उत्तम चरित्र हैं, सो-सो करो। और जो कभी हम भी बुरे काम करें उनको कभी मत करो।' इत्यादि उत्तम उपदेश और कर्म करने और माता-पिता और आचार्य आदि श्रेष्ठ कहाते हैं।

[राजा-प्रजा और इष्ट-मित्रों के साथ वर्त्ताव]

(प्र॰)-राजा-प्रजा और इष्ट-मित्रादि के साथ कैसा-कैसा व्यवहार करें?

(उ॰)-राजपुरुष प्रजा के लिए सुमाता और सुपिता के समान, और प्रजापुरुष राजसम्बन्ध में सुसन्तान के सदृश वर्त्तकर परस्पर आनन्द बढ़ावें। मित्र-मित्र के साथ सत्य व्यवहरों के लिए आत्मा के समान प्रीति से वर्तें, परन्तु अधर्म के लिए नहीं। पड़ोसी के साथ ऐसा वर्त्त मान करें कि जैसा अपने शरीर के लिए करते हैं। वैसे ही मित्रादि के लिए भी कर्म किया करें। स्वामी सेवक के साथ ऐसा वर्त्ते कि जैसा अपने हस्तपादादि अंगों की रक्षा के लिए वर्त्तते हैं। सेवक स्वामियों के लिए ऐसे वर्त्ते कि जैसे अन्न जल वस्त्र और घर आदि शरीर की रक्षा के लिए होते हैं।

[कन्याओं के विद्याध्ययन और ब्रह्मचर्य का विधान]

(प्र॰)-ब्रह्मचर्य के क्या-क्या नियम है ?

(उ॰)-कम से कम २५ वर्ष पर्यन्त पुरुष और सोलह वर्ष पर्यन्त कन्या को ब्रह्मचर्य सेवन अवश्य करना चाहिए। और अड़तालीसवें वर्ष से अधिक पुरुष और चौबीसवें से अधिक कन्या ब्रह्मचर्य का सेवन न करें। किन्तु उसके उपरान्त गृहाश्रम का समय है।

(प्र॰) प्रमादी ब्रू ते-पागल मनुष्य कहता है कि-' सुनो जी! कन्याओं का पढ़ना शास्त्रोक्त नहीं। क्योंकि जब वे पढ़ जावेंगी, तो मूर्ख पति का अपमान कर इधर-उधर पत्र भेजकर अन्य पुरुषों से प्रीति जमाके व्यभिचार किया करेंगी।

(उ॰) सज्जनःसमाधत्ते-श्रेष्ठ मनुष्य उसको उत्तर देता है कि-'सुनोजी! तुम्हारे कहने से यह आया कि पुरुष को भी न पढ़ना चाहिए। क्योंकि वह भी पढ़कर मूर्ख स्त्री का अपमान और डाकगाड़ी चलाकर इधर-उधर अन्य स्त्रियों के साथ सैर-सपाटा किया करेगा।'

(प्र॰)-प्रमादी- हाँ पुरुष भी न पढ़े, तो अच्छी बात है। क्योंकि पढ़े हुए मनुष्य चतुराई से दूसरों को धोखा देकर अपमान करके अपना मतलब सिद्ध कर लेते हैं।

(उ॰) सज्जन-सुनो जी! यह विद्या पढ़ने का दोष नहीं, किन्तु आप जैसे मनुष्यों के संग का दोष है और जो पढ़ना-पढ़ाना धर्म और ईश्वर की विद्या से विरूद्ध है, सो तो प्रायः बुरे काम का कारण देखने में आता है। और जो पढ़ना-पढ़ाना उक्त विद्या से सहित है वह तो सबके सुख और उपकार ही के लिए होता है।

(प्र॰) कन्याओं के पढ़ने में वैदिक प्रमाण कहाँ है ?

(उ॰) सुनो प्रमाण-

'ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्' ॥ १॥

-अर्थव॰ कां॰ ११, सू॰ ५, मन्त्र १८ ॥

अर्थ-जैसे लड़के लोग ब्रह्मचर्य करते हैं, वैसे कन्यालोग ब्रह्मचर्य करके वर्णोच्चारण से लेकर वेदपर्यन्त शास्त्रों को पढ़कर प्रसन्न करके स्वेच्छा से पूर्ण युवावस्थावाले विद्वान् पति को वेदोक्त रीति से ग्रहण करें।

क्या अधर्मी से भिन्न कोई ऐसा भी मनुष्य होगा कि किसी पुरुष वा स्त्री को विद्या के पढ़ने से रोककर मूर्ख रक्खा चाहे। और वेदोक्त प्रमाण का अपमान करके अपना कल्याण किया चाहे ?

-क्रमशः ....

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट–
www.aryanirmatrisabha.com
पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक
www.aryanirmatrisabha.com/if=kdk पर जाएं।

22 मार्च–19 अप्रैल 2019 **चैत्र** ऋतु– वसन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नवसँवत्सर प्रारम्भ आर्य समाज स्थापना दिवस 6 अप्रैल	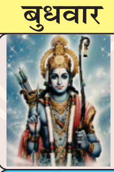	श्रीरामचन्द्र जयन्ती चैत्र शुक्ल नवमी 14 अप्रैल	हस्त कृष्ण प्रतिपदा/ द्वितिया 22 मार्च	चित्रा कृष्ण तृतीया 23 मार्च	स्वाती कृष्ण चतुर्थी 24 मार्च
विशाखा कृष्ण पंचमी 25 मार्च	अनुराधा कृष्ण षष्ठी 26 मार्च	ज्येष्ठा कृष्ण सप्तमी 27 मार्च	मूल कृष्ण अष्टमी 28 मार्च	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण नवमी 29 मार्च	उत्तराषाढ़ा कृष्ण दशमी 30 मार्च	श्रवण कृष्ण एकादशी 31 मार्च
धनिष्ठा कृष्ण द्वादशी 1 अप्रैल	शतभिषा कृष्ण द्वादशी 2 अप्रैल	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण त्रयोदशी 3 अप्रैल	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण चतुर्दशी 4 अप्रैल	रेवती कृष्ण अमावस्या 5 अप्रैल	रेवती शुक्ल प्रतिपदा 6 अप्रैल	अश्विनी शुक्ल द्वितीया 7 अप्रैल
भरणी शुक्ल तृतीया 8 अप्रैल	कृतिका शुक्ल चतुर्थी 9 अप्रैल	रोहिणी शुक्ल पंचमी 10 अप्रैल	मृगाशिरा शुक्ल षष्ठी 11 अप्रैल	आर्द्रा शुक्ल सप्तमी 12 अप्रैल	पुनर्वसु शुक्ल अष्टमी 13 अप्रैल	पुष्य/आश्लेषा शुक्ल नवमी 14 अप्रैल
मघा शुक्ल दशमी/ एकादशी 15 अप्रैल	पू० फाल्गुनी शुक्ल द्वादशी 16 अप्रैल	उ० फाल्गुनी शुक्ल त्रयोदशी 17 अप्रैल	हस्त शुक्ल चतुर्दशी 18 अप्रैल	चित्रा शुक्ल पूर्णिमा 19 अप्रैल	 23 मार्च शहीदी दिवस	

20 अप्रैल–18 मई 2019 **वैशाख** ऋतु– ग्रीष्म

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
					स्वाती कृष्ण प्रतिपदा 20 अप्रैल	विशाखा कृष्ण द्वितीया 21 अप्रैल
अनुराधा कृष्ण तृतीया 22 अप्रैल	ज्येष्ठा कृष्ण चतुर्थी 23 अप्रैल	मूल कृष्ण पंचमी 24 अप्रैल	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण षष्ठी 25 अप्रैल	उत्तराषाढ़ा कृष्ण सप्तमी 26 अप्रैल	श्रवण कृष्ण अष्टमी 27 अप्रैल	धनिष्ठा कृष्ण नवमी 28 अप्रैल
शतभिषा कृष्ण दशमी 29 अप्रैल	शतभिषा कृष्ण एकादशी 30 अप्रैल	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण द्वादशी 1 मई	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण त्रयोदशी 2 मई	रेवती कृष्ण चतुर्दशी 3 मई	अश्विनी कृष्ण अमावस्या 4 मई	भरणी शुक्ल प्रतिपदा 5 मई
कृतिका शुक्ल द्वितीया 6 मई	रोहिणी शुक्ल तृतीया 7 मई	मृगाशिरा शुक्ल चतुर्थी 8 मई	आर्द्रा शुक्ल पंचमी 9 मई	पुनर्वसु शुक्ल षष्ठी 10 मई	पुष्य शुक्ल सप्तमी 11 मई	आश्लेषा शुक्ल अष्टमी 12 मई
मघा शुक्ल नवमी 13 मई	पू० फाल्गुनी शुक्ल दशमी 14 मई	उ० फाल्गुनी शुक्ल एकादशी 15 मई	हस्त/चित्रा शुक्ल द्वादशी 16 मई	स्वाती शुक्ल त्रयोदशी/ चतुर्दशी 17 मई	विशाखा शुक्ल पूर्णिमा 18 मई	

Rishi Dayanand - His Life And Work

-Saroj Arya, Delhi

25. The president and other sabhasads of the Samaj shall ever strive, to utmost of their power, to look after and improve the Arya Samaj, the Arya Vidyalaya the Arya Prakasha paper, and the finances of the Samaj.

26. So long as an Arya Samajist can get a brother Arya Samajist to employ or to serve him, so long he should not employ or get anyone else to serve him. The relations in existence between these two should be the relations that ought to subsist between master and servant.

27. Whenever an occasion for making a donation arises, as for instance, in connection with a marriage, the birth of son, the realization of a fortune, or a death in the family and so on, the Arya Samajis concerned shall be expected to make donation on such an occasion. No act is more meritorious, and the members shall always bear this fact in mind.28. Whenever an addition is made to the principles or rules above laid down, or whenever any of these is altered or amended, such an addition, alteration or amendment shall invariably be the result of thorough deliberation on the subject by the exalted sabhasads of the Samaj, and the nature of the same shall be previously made known to all the members.

During the tour in the Punjab, two years later, Swamiji recast these rules, but one cannot ignore the historical importance of the above principles and bye-laws. It was so ordained that the society intended to perpetuate the work of Swamiji should have its birth in saurashtra the land of his birth-which, impelled from within, Mool Shankar had left as a boy. He had discarded his filial duty in response to a call for higher duty. According to some he committed a sin, that of ingratitude to his parents. If it was a sin at all, none could have atoned better for it; his noble expiation is a matter of history. Nobody, however, has cared to remark that the buddha was untrue to his wife and newly-born babe, when he renounced worldly life in search of Truth.

From Bombay Swamiji proceeded to Farrukhabad and then to Banaras. Passing some time at Jaunpur and Ayodhya, he left for lucknow towards the close of October, 1876. Hearing of the Imperial Darbar to be held at Delhi, he reached there, feeling that the function would provide him a good opportunity to discuss things with the rulers of Native States and leaders of society who might be present there. The rulers and chiefs who were preoccupied with other matters had no time to attend to Swamiji, and under the circumstances, he convened a meeting of several men of spirituality and leader belonging to different communities to discuss and explore avenues of co-operation in the work of social and political reform.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

द्विदिवसीयं सत्रमिदं प्रत्येकमपि मानवाय श्रेयस्करं वर्तते, मयाऽपि सत्रेऽस्मिन् प्रथमतया भागः गृहीतः। अत्यन्तमहत्वपूर्णेषु विषयेषु विस्तरेण विदुषामाचार्याणां ज्ञानविज्ञानयुतानि सुदुर्लभानि ओजपूर्णानि व्याख्यानानि सञ्जातानि, यानि समेषांकृते ज्ञानवर्धकानि मार्गदर्शकानि च सन्ति, अस्माकं पूर्वजै ऋषि महर्षिभिः प्रोक्तः य ईश्वरप्रणीतः कल्याणकरः मार्गः वर्तते, अस्य मार्गस्य अनुसरणानुकरणायास्माकं मार्गदर्शनं विहितवन्तः। अमुभ्यो वेदविद्याप्रचारकेभ्यो श्रेष्ठाचार्येभ्यो धन्यवान् प्रणामाञ्जलिञ्च समर्प्यात्मानं धन्यं मन्ये। राष्ट्रियार्यनिर्मात्री सभायाः पुण्यपवित्रकर्मणि मयाऽपि यथाशक्तिः यथासामर्थ्यं यथाकालञ्च सेवा करिष्यते। मयाऽपि श्रेष्ठराष्ट्रनिर्माणसंरक्षणकर्मणेऽस्मिन् यावच्छक्यं स्वीयकर्तव्यस्य निर्वहनं विधाष्यते।

''कृण्वन्तोविश्वमार्यम् ...''

आचार्य विशालः, आयुः 26 वर्ष, योग्यताः आचार्यः शिक्षाशास्त्री, पताः रूद्रप्रयाग, उत्तराखण्ड।

इस सत्र में आकर मुझे अच्छा लगा। जो दो दिन का सत्र था मेरी कुछ भ्रान्तियां थी जिन्हें लेकर मैं अविद्या में रहता था लेकिन इन दो दिन में मेरी सारी भ्रान्तियाँ दूर हो गई। अंधविश्वास के प्रति जागृति पैदा हुई। देश भक्ति की चेतन जागी, नशे के प्रति चेतना जागी। देश में कुछ लोगों द्वारा फैलाई जा रही कुरीतियों (भ्रान्तियों) की जागृति के बारे में पता चला। मेरे जो पिछले 28 साल और ये दो दिन बराबर रहे। अगर यह ज्ञान मुझे पहले मिल जाता तो गर्व महसूस करता।

नामः अमित कुमार, आयुः 31 वर्ष, योग्यताः बी.ए., कार्यः कृषि, पताः कलरी जागीर, करनाल, हरियाणा।

सत्र का अनुभव जीवन को बदलने वाला है। हर विषय को तर्क के साथ बताया गया है। अन्धविश्वास से दूर रहकर ही हम अपने चरित्र एवं राष्ट्र का विकास कर सकते हैं। ईश्वर को यहीं से परिभाषित किया गया है। वेद जिन्हें हम भूल चुके हैं उनके लाभ से परिभाषित किया है। मूर्तिपूजा एवं नशे से बचे, ये सब बहुत प्रभावित करने वाला था। राष्ट्रनिर्माण एवं राष्ट्र रक्षा के लिए हमें क्या करना चाहिए वो यही आकर पता चला। सत्र की हर बात हमारे व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाली है। भविष्य में मैं ज्यादा से ज्यादा आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार एवं प्रसार करूंगा।

नामः शाशी कान्त, आयुः 32 वर्ष, योग्यताः बी.ए., कार्यः कृषि, पताः कलरी जागीर, करनाल, हरियाणा।

इस सत्र में आना मेरे लिए एक आँखे खोल देने जैसा रहा। कितनी गलत धारणाएँ जो हमने अपने विचारों में बचपन से पाल रखी थी, वे बदल गई। जैसे-गुरु गोविन्द दोउ खड़े, काके लागु पाय। गुरु को महान मानते आज लेकिन ईश्वर गुरु से महान है, यह समझ में आया। गीता के नाम पर गलत ज्ञान-क्या ले कर आए, क्या ले कर जाना है। यह इंसान को आलस और भाग्य के भरोसे पड़े रहने पर मजबूर करता है। परन्तु यह सत्र इन सारी गुलामी और दासता, अकर्मणयता छोड़कर पुरुषार्थ करने पर बल देता है। हमें भाग्य के भरोसे ना बैठ कर अपनी भुजाओं का भरोसा करना चाहिए। स्त्री जाति के उत्थान के बारे में, स्त्री किसी से कम नहीं है, वह अबला नहीं है। आंचल में दूध आखों में पानी वाली नारी नहीं है वह अच्छे बालकों का निर्माण कर, अपने पति को अच्छे कार्य करने में प्रोत्साहित कर, एक सुदृढ राष्ट्र का निर्माण करने मे सहयोग कर सकती है। बाहरी ताकतें हमें गुलाम बना लेती हैं, हमारे घरों पर कब्जा कर लेती हैं और हम अपने बीते हुए कल, अपने इतिहास से सबक नहीं लेते यही हमारे राष्ट्र की विडम्बना है। इन जैसी बहुत सी बातों का ज्ञान मुझे इस सत्र से प्राप्त हुआ।

हम सब हिन्दुओं को एक जुट होकर, अपने राष्ट्र की रक्षा करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। हम मैदान में लड़ नहीं सकते किन्तु एक अच्छे प्रेरणा स्रोत बन सकते हैं।

नामः रीना गुप्ता, आयुः 46 वर्ष, योग्यताः बी.ए., कार्यः गृहणी, पताः सलकिया, पश्चिम बंगाल।

इस सत्र में आकर हमें बहुत अच्छा लगा। इस सत्र में हमें ऐसी बहुत सी जानकारियां मिली जिससे हम अवगत नहीं थे। हम अपने पूवर्जो के बारे में भी गलत राय रखते थे। हमें अभी तक अंधेरे में रखा गया। इस सत्र में हमें ये भी पता चला कि हमारे पूर्वज कौन और कैसे थे और हमारी गलतियों के कारण हमारा पतन हुआ। हमें अब इस गलती को नहीं दोहराना है यही प्रेरणा मिली। आर्य का अर्थ तक नहीं जानते थे वो आज जान पाये। एक आर्य का रहन सहन, खानपान कैसा हो ये सीखने को मिला। सच में बहुत अच्छा लगा। लेकिन दुख इस बात का है कि आज तक हम लोगों को गलत इतिहास पढ़ाया गया। जो गलती हुई हमसे अब आगे अपने बच्चों से न हो ऐसा शिक्षा लेकर जा रहे है। सब मिलकर इस सत्र से ऐसी प्रेरणा लेकर जा रहे हैं।

मैं इस संस्था से जुड़कर लोगों को प्रेरणा का स्रोत बनना चाहूंगी और सामर्थ्य अनुसार सेवा करूंगी।

नामः संगीता गिरी, आयुः 35 वर्ष, योग्यताः 10, कार्यः गृहणी, पताः उत्तर 24 परगना, पश्चिम बंगाल।

संध्या काल

चैत्र- मास, बसन्त ऋतु, कलि-5120, वि. 2076	वैशाख- मास, ग्रीष्म ऋतु, कलि-5120, वि. 2076
(22 मार्च 2019 से 19 अप्रैल 2019)	(20 अप्रैल 2019 से 18 मई 2019)
प्रातः कालः 6 बजकर 45 मिनट से (6.45 A.M.)	प्रातः कालः 7 बजकर 00 मिनट से (7.00 A.M.)
सायं कालः 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 P.M.)	सायं कालः 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 P.M.)

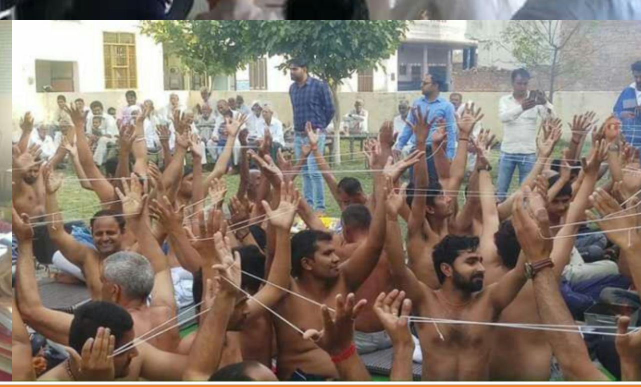

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्रि सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।